

भूमण्डलीकरण के लिए कौन-कौन से उत्तरदायी कारण हैं? विवेचना करें----

भूमण्डलीकरण या वैश्वीकरण का साधारण शब्दों में अर्थ एक राज्य की अर्थव्यवस्था को विश्व के दूसरे राज्यों की अर्थव्यवस्था के साथ एकीकरण एवं समन्वयन करना है। इस प्रक्रिया के मार्ग में आने वाली सभी बाधाओं को दूर करना है। विदेशी पूँजी निवेश को प्रोत्साहित करना, बैंकिंग, ऊर्जा, बीमा आदि क्षेत्रों में निजीकरण की अनुमति देना और आयात निर्यात की निति में ढील देना है।

भूमण्डलीकरण के अन्तर्गत राष्ट्र राज्य की भावना और सीमा समाप्त होती जा रही है। बहुत से देशों ने एक दूसरे के आने जाने के लिए अपनी सीमाएँ खोल दी है। राष्ट्र राज्यों में बढ़ रहे आर्थिक, सामाजिक और मेल मिलाप तथा सहयोग को भूमण्डलीकरण कहा जाता है।

भूमण्डलीकरण के कारण----

1. विज्ञान और तकनीकी विकास
2. राष्ट्रों की परस्पर निर्भरता में वृद्धि
3. पर्यावरण की रक्षा और संरक्षण
4. पूँजीवादी देशों का हित
5. विकासशील देशों में बिगड़ती आर्थिक स्थिति

1. विज्ञान और तकनीकी

विकास----भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया का उदय और विकास में विज्ञान और तकनीकी विकास का सबसे अधिक योगदान रहा है। संचार और यातायात के साधनों ने दूरी और समय को लगभग समाप्त कर दिया। सूचना प्रौद्योगिकी ने व्यापक क्षेत्र में क्रान्ति लायी है। सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्रों में घनिष्ठता व परस्पर निर्भरता को पैदा किया है। समूचा विश्व एक भूमण्डलीय गाँव बन गया है।

2. राष्ट्रों की परस्पर निर्भरता में वृद्धि--आज सभी छोटे बड़े विकसित और अविकसित, कमजोर और शक्तिशाली राज्य किसी न किसी आधार पर एक दूसरे पर निर्भर है। सभी राज्यों में परस्पर निर्भरता दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। विश्व सभी नागरिक जाति रंग लिंग नस्ल धर्म, भाषा और संस्कृति आदि के भेदभाव को भुलाकर समूची मानवता के परिप्रेक्ष्य में सोचने लगे हैं। सभी राष्ट्र सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक समस्याओं का समाधान करने के लिए एक दूसरे पर निर्भर हो रहे हैं। कोई भी राष्ट्र ऐसा नहीं है जो प्राकृतिक साधनों से सम्पन्न हो। पर्यावरण प्रदूषित होने से कई ऐसी भयंकर बीमारियाँ पैदा हो चुकी हैं। जिनका कोई भी राष्ट्र अकेले सामाना नहीं कर सकता। आपसी सहयोग से राष्ट्रों ने कई भयंकर बीमारियों से मानवजाति को रोग से मुक्ति दिलाई है। परस्पर सहयोग से राष्ट्र आर्थिक मंदी का सामना कर रहे हैं। आर्थिक सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों में राष्ट्रों की परस्पर निर्भरता ने भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया को प्रोत्साहित किया है।

3. पर्यावरण की रक्षा और संरक्षण---पर्यावरण की रक्षा और संरक्षण की समस्या एक विश्वव्यापी समस्या है। कोई भी अकेला राष्ट्र पर्यावरण को दूषित होने से बचा नहीं सकता। सभी राष्ट्र एकजुट होकर पर्यावरण को दूषित होने से बचा सकेंगे। पर्यावरण का प्रदूषित होना युद्धों से भी विनाशकारी होगा। लगभग सभी राष्ट्र इसके प्रति सचेत हुए हैं। पर्यावरण की रक्षा और संरक्षण की जरूरत ने भूमण्डलीकरण के उदय और विकास में योगदान दिया है।

4. पूँजीवादी देशों का हित---राजनीतिक औपनिवेशवाद लगभग समाप्त हो चुका है। पूँजीवादी एवं विकसित देश गरीब और अविकसित देशों पर किसी न किसी रूप से नियंत्रण स्थापित रखने की इच्छा रखते हैं। पूँजीवादी देशों की बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियों की विश्व के सभी बाजारों तक स्वतंत्र पहुँच की सदा इच्छा रखते हैं। वे अपनी सरकारों पर यह दबाव बनाती है कि अविकसित देशों द्वारा उन पर लगाई गई बाधाओं को हटवाएँ और पूँजी एवं सामान सम्बन्धी स्वतंत्र आवागमन की सुविधाएँ उपलब्ध करवाएँ। पूँजीवादी देशों द्वारा पूरे विश्व को बाजार आधारित अर्थव्यवस्था में लाने की एक सोची समझी चाल है। पूँजीवादी व शक्तिशाली देशों की ऐसी चाल ने भूमण्डलीकरण के उदय और विकास को प्रोत्साहित किया है।

5. विकासशील देशों की बिगड़ती आर्थिक स्थिति-----अविकसित एवं विकासशील देशों को अपने आर्थिक विकास में तेजी लाने के लिए विश्व बैंक और दूसरी वित्तीय संस्थाओं से ऋण लेना पड़ रहा है। ऋण देते समय इन संस्थाओं द्वारा इन देशों पर कई प्रकार की शर्तें लगाई जाती हैं जिनको पूरा करना इन देशों के लिए आवश्यक होता है। अविकसित एवं विकासशील देशों के बढ़ते हुए ऋण और घटते हुए उत्पादन के कारण विकसित देशों के विश्व बैंक की दूसरी वित्तीय संस्थाओं के माध्यम से इन देशों पर अपना अर्थव्यवस्थाओं को बाजार पर आधारित विश्व अर्थव्यवस्था से जोड़ना पड़ रहा है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया एवं संचार के दूसरे साधनों में चमत्कारिक वृद्धि और विकासशील देशों की बिगड़ती आर्थिक स्थिति से भूमण्डलीकरण के विकास को काफी बढ़ा उछाल मिला है। विकासशील देश दबाव और अपने विकास की आवश्यकताओं के कारण अपने आपको अर्थव्यवस्था से जोड़ रहे हैं।

आगे, धन्यवाद।